

 सत्यमेव जयते	राजस्थान राजपत्र विशेषांक	RAJASTHAN GAZETTE Extraordinary
	साधिकार प्रकाशित	Published by Authority
	श्रावण 13, शुक्रवार, शाके 1945-अगस्त 04, 2023 <i>Sravana 13, Friday, Saka 1945- August 04, 2023</i>	

**भाग-1(ख)**

**महत्वपूर्ण सरकारी आज्ञायें।**

**वन विभाग (क)**

**विज्ञप्ति**

**जयपुर, मई 17, 2023**

**संख्या प. 2 (18)वन/2023 :-**चूंकि संलग्न अनुसूची में वर्णित वनभूमि एवं बंजर भूमि सरकार की सम्पत्तियाँ हैं या उनमें सरकार के स्वामित्व अधिकार हैं या उनकी सम्पूर्ण या आंशिक वन उपज पर सरकार का अधिकार है

और चूंकि उपर कथित वनभूमि या बंजर भूमि को सरकार, राजस्थान वन अधिनियम, 1980 की धारा 29 की उप-धारा (1) के अन्तर्गत संरक्षित वन के रूप में घोषित करने का विचार रखती है,

और चूंकि, पूर्वोक्त भूमि पर सरकार और निजी व्यक्तियों के अधिकारों की सीमा एवं स्वरूप अभी तक किसी भी प्रकार से लेखबद्ध नहीं किये गये हैं,

और चूंकि, सरकार यह भी विचार रखती है कि पूर्वोक्त वनभूमि या बंजर भूमि में या उस पर सरकार एवं निजी व्यक्तियों के अधिकारों की सीमा एवं स्वरूप के संबंध में जांच किया जाना एवं उन्हें लेखबद्ध किया जाना आवश्यक है, परन्तु चूंकि इन कार्यों के सम्पादन में जितना समय लगेगा कि इस प्रक्रिया के समाप्त होने तक सरकार के अधिकारों की क्षति पहुँचने की आशंका रहेगी।

अब इसलिए, राजस्थान वन अधिनियम, 1953 (1953 का अधिनियम सं. 13) की धारा 29 की उप धारा (3) द्वारा शक्तियों के प्रयोग में सरकार वन बन्दोबस्त अधिकारी को पूर्वोक्त वनभूमि या बंजर भूमि में या सरकार एवं निजी व्यक्तियों के अधिकारों की जाँच करके उन्हें लेखबद्ध करने हेतु नियुक्त करती है और ऐसी जांच, साक्ष्य एवं अभिलेख उस प्रणाली में किया जायेगा जैसा कि इस अधिनियम की धारा 6 ,7 ,8 ,10 ,11(2) ,12,13,14,17,18 एवं 19में प्रवाहित है।

और, इस अधिनियम की धारा 29 की उप धारा (3) के परन्तुक (Provison) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के अनुसरण में, राजस्थान सरकार उपर कथित जांच एवं अभिलेख के विचारार्थ रहते, कथित वनभूमि एवं बंजर भूमि को इस विज्ञप्ति के द्वारा संरक्षित (Protected) वन के रूप में घोषित करती है, परन्तु इससे व्यक्तियों या वर्ग विशेष के वर्तमान अधिकारों में किसी भी प्रकार की कमी नहीं होगी और न ही उन पर कोई विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

और इस अधिनियम की धारा 30 द्वारा प्रदत्त शक्तियों के अग्रेतर अनुसरण में सरकार यह भी घोषणा करती है कि उक्त रक्षित वन के वृक्ष जो इसके साथ संलग्न द्वितीय अनुसूची में अंकित किये गये हैं, इस अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशित होने की तिथि से आरक्षित (Reserved) हो जावेंगे और पूर्वोक्त तारीख से कथित वन में पत्थर खोदना या चूना या लकड़ी का कोयला जलाया जाना अथवा किसी भी प्रकार की वन उपज का संग्रहण किया जाना या निष्कासन करना या हटाया जाना

और उक्त वन में किसी भूमि की खूदाई या कृषि हेतु या भवन निर्माण हेतु या मवेशी चराने या अन्य प्रयोजनार्थ वन की सफाई करना या वनभूमि को खण्डित किया निषिद्ध करती है।

प्रथम अनुसूची (वन भूमि एवं बंजर भूमि)

द्वितीय अनुसूची (आरक्षित वृक्ष)

राज्यपाल की आज्ञा से,

मोनाली सेन,

शासन सचिव (वन)।

प्रथम अनुसूची

क्र.स.	नाम ब्लॉक	नाम तहसील	नाम जिला	दिशा	दिशावार सीमा विवरण	राजस्व ग्राम	विवरण		
							खसरा नं.	क्षेत्रफल (हेक्टर)	भूमि किस्म
1.	सोमावत	ऋषभदेव	उदयपुर	उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम	सीमा वन भूमि व खातेदार सीमा वन भूमि खातेदार	सोमावत	6438/42 26	0.44 है०	पहाड
							4198	1.19 है०	पहाड
							योग	1.63 है०	

मोहम्मद फजलें रब्बी,  
क्षेत्रीय वन अधिकारी  
खैरवाडा।

मुकेश सैनी,  
उप वन संरक्षक,  
उदयपुर।

## प्रमाण पत्र

वन खण्ड - सोमावत

रेंज - रेंज खैरवाडा

वन मण्डल - उप वन संरक्षक, उदयपुर

1. प्रारूप में दर्शाई गई भूमि प्रधानमंत्री ग्राम योजना के अन्तर्गतनाल से डूंगरा सड़क निर्माण से प्रभावित होने वाली वन भूमि के बदले में प्राप्त हुई गैर वन भूमि हैं। कुल प्रभावित 1.63 हैक्टेयर वन भूमि के बदले ग्राम सोमावत तहसील ऋषभदेव की बिलानाम आराजी नम्बर 4198 रकबा 1.19 है० पहाड एवं आराजी नम्बर 4226 रकबा 0.89 है० में से 0.44 है० हैक्टेयर किस्म पहाड कुल कित्ता 2 रकबा 1.63 है० भूमि राजस्थान भू -राजस्व अधिनियम- 1956 की धारा -92 के तहत वन विभाग के लिये आरक्षितकी गई थी। जो वर्तमान में राजस्व रिकार्ड में वन विभाग के नाम से अमलदरामद हो चुकी है। इस भूमि पर वन विभाग द्वारा वानिकीय विकास कार्य करवाये जाने है।
2. विज्ञप्ति प्रपत्र में उल्लेखित भूमि वन विभाग के अधीन है। प्रस्तावित भूमि में प्रथम दृष्टतया कोई अतिक्रमण, खनन कार्य नहीं किये हुए है।
3. प्रस्तावित वन क्षेत्रों में समस्त क्षेत्र विभाग के अधीन है, जिन पर वानिकीय विकास कार्य किये जाने है।
4. प्रस्तावित भूमि पर वृक्षों का घनत्व लगभग 30 से 40 प्रतिशत तक का है एवं इन क्षेत्रों में मुख्य सागवान, खाखरा, बबूल चुरेल व खिरनी प्रजातियों के पेड एवं झडियां है।
5. प्रस्तावित क्षेत्र की समस्त भूमि वन विभाग के अधीन है तथा समीपवर्ती खातेदारी भूमिया वन सीमाओं से पृथक हैं एवं इससे प्रस्तावित वन क्षेत्रों के संरक्षण में कोई अवरोध नहीं होगा। विभागाधीन भूमियों का विकास कार्यों में उपयोग होगा।
6. प्रस्तावित भूमि का मानचित्र संलग्न है।
7. प्रस्तावित भूमि को मौके पर सुविज्ञ रूप से सीमाज्ञान नहीं होने के कारण अधिसूचना हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं किये जा सके थे किन्तु अब सीमाज्ञान के पश्चात् प्रस्ताव प्रारूप बनाये जाकर प्रेषित किये जा रहे है।
8. इस वन भूमि का पूर्व में राजपत्र में प्रकाशन नहीं हुआ है।

मोहम्मद फजलें रब्बी,  
क्षेत्रीय वन अधिकारी  
खैरवाडा।

मुकेश सैनी,  
उप वन संरक्षक,  
उदयपुर।

## द्वितीय अनुसूची (आरक्षित वृक्ष)

## पेड़ों की सूची

## वनखण्ड -सोमावत

क्र.स.	बोटैनिकल नाम	हिन्दी नाम
1	Butea monosperma (Lamk.) Taub	खाखरा
2	Wrightia tinctoria (Roxb.) R.Br.	खिरनी
3	Holoptelea integrifolia (Roxb.) Planch	चुरैल
4	Tectona grandis L. f. Suppl	सागवान
5	Prosopis Juliflora (Swarfz) DC.	विलायती बबुल

मोहम्मद फजलें रब्बी,  
क्षेत्रीय वन अधिकारी  
खैरवाडा।

मुकेश सैनी,  
उप वन संरक्षक,  
उदयपुर।

राज्य केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर।